मज़हबी दहशत गर्दी और मज़ाराते सहाबा व औलिया
की बेहुरमती से मोतअ़ल्लिक़

जामिअ़तुल अज़हर का

एक तारीख़ी फ़तवा



तर्जमा व तस्हील
मुहम्मद अफ़रोज़ क़ादिरी चिरैयाकोटी
दल्लास यूनिवर सिटी, कैपटाउन, दक्षिण अफ़्रीक़ा

नाशिर
रिफ़ाई मिशन, नासिक, महाराष्ट्र, इण्डिया

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

मज़हबी दहशत गर्दी , इन्तेहा पसन्दी , और मज़ाराते औलिया व सोलहा की बेहुरमती के तअ़ल्लुक़ से जामिअ़तुल अज़हर मिस्र के अरबाबे फ़िक़्ह व इफ़्ता का एक मअ्रकतुल आरा, और चश्म कुशा तारीख़ी फ़तवा.

न पूछ इन ख़िरक़ा पोशों की इरादत हो तो देख इनको
यदे बैज़ा लिये बैठे हैं अपनी आस्तीनों में

जामिअ़तुल अज़हर का एक तारीख़ी फ़तवा

तर्जमा व तरतीब

मुहम्मद अफ़रोज़ क़ादिरी चिरैयाकोटी

दल्लास यूनिवर सिटी, कैपटाउन, दक्षिड़ अफ़्रीक़ा

तफ़सीलात

فتوى الأزهر الشريف بخصوص تحريم هدم الأضرحة

तर्जमा : अबू रिफ़क़ा मुहम्मद अफ़रोज़ क़ादिरी चिरैयाकोटी

दल्लास यूनिवर सिटी, कैपटाउन, साउथ अफ़्रीक़ा

afrozqadri@gmail.com

तस्वीब : अ़ल्लामा मुहम्मद अ़ब्दुल मुबीन नोमानी क़ादिरी

तह़रीक : ह़ज़रत अ़ल्लामा डॉक्टर मुह़म्मद आ़सिम आज़मी घोस्वी

नज़रे सानी : अ़ल्लामा मौलाना सय्यद मुह़म्मद रिज़वान रिफाई

कम्पोज़िंग : मुह़म्मद अरशद क़ादिरी घोस्वी

सफ़ह़ात : 32

इशाअ़त : 2014 / 1435

तक़्सीमे कार : इदारा फ़रोग़े इस्लाम, चिरैयाकोट, मऊ, यूपी।

नाशिर : रिफाई मिशन, नासिक, महाराष्ट्र, इन्डिया।

मेरी बातें

نحمده ونصلى ونسلم علىٰ رسوله الكريم وعلىٰ آلهٖ وصحبهٖ أجمعين

यह एक तारीख़ी और ज़मीनी ह़क़ीक़त है कि दुनिया में मज़ारात की तौहीन का अ़मल सबसे पहले यहूद व नसारा ने शुरू किया था। सुल्तान नूरूद्दीन ज़ंगी ने नसरानियों के एक ऐसे ही नापाक तरीन मन्सूबे को नाकाम बनाते हुए ताजदारे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम की बशारत पर रौज़ा–ए–रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम के तह़फ़्फ़ुज़ का भर पूर इहतेमाम किया।

सल्तनते उस्मानिया के ख़ातिमे के बाद आले सऊद ने जन्नतुल बक़ीअ़ और जन्नतुल मुअ़ल्ला में इस अ़मल को दोहरा कर उनहीं यहूद व नसारा की पैरवी की। फिर यहूदियों ने मुक़द्दस मक़ामात की तौहीन करते हुए 1967 ईस्वी में मस्जिदे अक़्सा की बेहुरमती की और उसके क़ुर्ब व जवार में वाक़ेअ उस मुक़द्दस तरीन क़ब्रिस्तान को बुल्डोज़ किया जहाँ सैकड़ों अम्बिया व रूसुल के मुक़द्दस व मुत़ह्हर मज़ारात मौजूद थे।

क़िब्ला–ए–अव्वल की बेहुरमती और अम्बिया व रुसुल के मुक़द्दस व मुत़ह्हर मज़ारात को मिस्मार करने के इक़्दाम से दुनिया भर के सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी मुसलमानों को यह बात समझ लेना चाहिये कि यह सिलसिला ह़सन बिन सबाह़ के ह़श्शाशीन से शुरू हुवा, जिसे दौरे जदीद में वहाबी ह़श्शाशीने सलीबी व सहयूनी एजन्डे के तह़त जारी रखे हुए हैं। जो जय्यिद उलमा, सूफ़िया, फ़ुक़हा, मुजतहिदीन और मुजाहिदीन के क़त्ल व इग़वा की वारदातों में पेश पेश और मज़ाराते

औलिया व बुज़ुर्गाने दीन पर ह़म्ले में मुलव्विस हैं।

हमारे यहाँ भी यही कुव्वतें मज़ारात पर खुद कुश हम्लों को जवाज़ बना कर अपनी मस्लकी और सियासी दुकानदारी चमका रही हैं। यही ह़ाल आज कल लीबिया में है जहाँ कर्नल मुअ़म्मर क़ज़्ज़ाफ़ी की शहादत और इक़्तिदार के ख़ातिमे के बाद यही वहाबी ह़श्शाशीन मुतह़र्रिक और मज़ाराते बुज़ुर्गाने दीन के ख़िलाफ़ सरगर्मे अ़मल हैं और उनहोंने वहाँ मज़रात को हदफ़ बनाया, और बम धमाकों के ज़रया उनहें शहीद किया। ज़ेल में लीबिया की वुज़ारते औक़ाफ़ की तरफ़ से जारी करदा कुछ तफ़सीलात दर्ज हैं:

सय्यद अ़ब्दुल वाह़िद के गुम्बद को الجبل الأخضرغربی مدينة سة में उड़ाया (शहीद किया) गया। सय्यद अ़ब्दुल वली मह़जूबी को الجبل الأخضر منطقة الوسيطة में उड़ाया (शहीद किया) गया। सय्यद यूसुफ़ के गुम्बद को الجبل الأخضر منطقة الحمامة में उड़ाया (शहीद किया) गया। सय्यद सअ़दुल फ़ाख़िरी के गुम्बद को شرق ليبيامنطقة جروس में उड़ाया (शहीद किया) गया। सय्यद अ़ब्दुल्लाह के गुम्बद को الجبل الأخضر منطقة زاويةالعرقوب में उड़ाया (शहीद किया) गया। مدينة زليتن के अन्दर मज़ारात पर बमबारी की गई और अ़ब्दुस्सलाम अस्समर, ह़म्माद अबू काग़ज़ और सय्यद हमद अबू रूकय्या के गुम्बद को निशाना बनाया गया। सय्यद मुह़म्मद ज़फ़ीर की क़ब्र को खोद कर उनकी लाश को ना मअ़लूम मक़ाम पर मुनतक़िल कर दिया गया, और एक सह़ाबी के मज़ारे मुबारक को खोदा गया। مصراتة के शहर में भी मज़ारात पर बमबारी की गई। सय्यद मिस्तारी की कब्र खोद कर उनकी लाश को مدينة درنة से बाहर ले जाया गया। सय्यद फ़ातिमा ज़हरा अ़साविया पर ह़म्ला और बन ग़ाज़ी में सूफ़ियाना शहर الدسوقية को जलाने की जी तोड़ कोशिशें की गईं।

अभी हाल ही में नजदी फ़िक्र की हक़ीक़ी तर्जमान अस्करी तन्ज़ीम दाइश ने बेलादे इस्लामिया खुसूसन इराक़ में जो ले दे मचाई है और मज़ारात व मसाजिद की मिस्मारी का जो नापाक सिलसिला शुरू कर रखा है उसकी मुल्की और मज़हबी सतह पर जितनी भी मज़म्मत की जाए कम है। इन ख़ारजियों ने चालीस सहाबा–ए–किराम के मज़ारात समेत तारीख़ी मस्जिद अल–अरबईन(तकरेत, इराक़)को 24 सितम्बर 2014 बरोज़ बुध को धमाका ख़ेज़ मवाद लगा कर शहीद कर दिया।

ऐसी संगीन सूरते हाल को देख कर ज़ाहिर है दिले दर्द मन्द रखने वाला कोई सहीहुल अक़ीदा मुसलमान बेचैन व मुज़्तरिब हुए बेग़ैर नहीं रह सकता!। इस फ़ेअ़ले क़बीह की हर सतह पर जितनी भी मुज़म्मत की जाए कम है।

जामिअ़तुल अज़हर के अरबाबे फ़िक़्ह व इफ़्ता ने ऐसी कर्ब आसार और अफ़सोस नाक सूरते हाल को देखते हुए और वक़्त के एक सुलगते हुए मस्अले पर इस्लामी नुक़्ता–ए–निगाह को दो टोक बयान करके और अपना बेलाग तबसेरा व इन्दिया पेश करके मज़हब व मस्लक से अपनी पूरी पूरी वफ़ादारी का भर पूर सोबूत फ़राहम किया है। इस फ़तवा का उर्दू तर्जमा हिन्द व पाक के बहुत से मअ़रूफ़ रसाइल व जराइद में शाएअ़ हो चुका है। क़ारिईन के इसरार पर और इफ़ादा–ए–आ़म की गरज़ से अब इसे मरहला–ए–तबाअ़त से गुज़ारा जारहा है। उम्मीद है यह काविश ब निगाहे तहसीन देखी जाएगी। अल्लाह हम सब का हामी व नासिर हो।

मुहम्मद अफ़रोज़ क़ादिरी चिरैयाकोटी

12/सफ़र1433हिजरी। 6/जनवरी2012ईस्वी

दुआइया कलेमात

نحمده ونصلی علیٰ رسوله الکریم أما بعد !

अस्रे हाज़िर में आक़ा–ए–करीम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की उम्मते मरहूमा दाख़िली व ख़ारिजी बहुत से फ़ितनों से बयक वक़्त दो चार है। एक त़रफ इराक़ से अफ़ग़ानिस्तान, बरमा से फ्लस्त़ीन और कशमीर से कन्या कुमारी तक पूरी उम्मते मुस्लिमा लहू रंग है, मिल्लत का जिस्म छल्नी छल्नी है, हर त़रफ़ ग़म व सोग की कैफ़ियत है। जिधर भी कान लगाते हैं अपने ही मुसलमान भाइयों की आह व बुका, ख़ौफ़नाक चीख़ें और सिस्कियाँ सुनाई देती हैं, और जिस सम्त निगाह उठाते हैं मुसलमानों के ख़ून की नदियाँ बह रही हैं, बेगोर व कफ़न लाशें हैं, कटे फटे जिस्म हैं, उजड़ी हुई बस्तियाँ हैं और जलते हुए मकानात। तो दूसरी त़रफ़ वहाबी व नजदी अफ़कार व नज़रियात जसदे मिल्लत को खोखला और शआइरे उम्मत को मिस्मार करते चले जा रहे हैं।

यह लश्करे त़ैबा, जमइयतुद्दअ़वा, हिज़्बुल मुजाहिदीन और दाइश (ISIS) वग़ैरह नाम निहाद अ़स्करी व तन्ज़ीमी जमाअ़तें दरअस्ल उसी वहाबियाई फ़िक्र के नापाक जुरसूमे हैं, जिनका मत़मह़े नज़र इसके सिवा कुछ नहीं कि मज़ारात व मशाहिद मुनहदिम करदी जाएँ, हत्ता कि वह मस्जिदें भी जो अहलुल्लाह से मनसूब व मोअ़नवन हैं। साथ ही मअ़मूलात व अ़क़ाइदे अहले सुन्नत का कुल्लियतन सफ़ाया कर दिया जाए, जिसके लिये वह जी तोड़ और बे तकान ज़ह़मते बेजा किये जा रहे हैं। आ़लम यह है कि आज नजदी उलमा ने मक्का और मदीना से तारीख़े इस्लाम के सारे आसार चुन चुन कर मिटा दिये हैं।

आज जन्नतुल बक़ीअ़ या मैदाने उहुद में जाकर देखिये तो आँखें खून के आँसू रोने पर मजबूर हो जाती हैं और दिल ग़म व अन्दोह की मुजस्सम तस्वीर बन जाता है, बक़ौले मीर तक़ी मीरः

मुद्दत से शहर दिल का वीरान होरहा है

जाए नज़र जहाँ तक मैदान हो रहा है

कहीं कहीं पत्थर के ढेले रखे हुए हैं, वाक़िफ़े कार हज़रात उनकी तरफ़ इशारा करके बताते हैं कि अहले बैते अत्हार के मक़ाबिर यहाँ हैं, हलीमा सादिया वहाँ मदफ़ून हैं, हज़रत हमज़ा का मज़ार उस सम्त है, वग़ैरह वग़ैरह। खुद सय्यदतुन्निसा हज़रत फ़ातिमा ज़हरा का मज़ार एक मुश्त ख़ाक से ज़्यादा नहीं!। यह कैसी तौहीद है कि अपने तारीख़ी आसार मिटाती चली जारही है, इसे तो कुछ और नाम देना चाहिये!।

तारीख़ी शवाहिद बताते हैं कि इस्लामी आसार के इनहिदाम का यह नापाक सिलसिला कोई 1925 ईस्वी में सऊदी के अन्दर शुरू हुवा था और आज तक मुख़्तलिफ़ शक्लों में यह इनहिदामी कर्रवाइयाँ हिजाज़े मुक़द्दस और दूसरे इस्लामी ममालिक में जारी व सारी हैं। अब नौबत यहाँ तक पहुँच चुकी है कि हाल ही में सऊदी हुकूमत के रेज़ा ख़्वार मुफ़्तियों ने रौज़ा–ए–रसूल सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की मुनतकिली का फ़तवा भी शाएअ़ कर दिया। व नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक।

इस लिये बहुत मुनासिब मअ़लूम हुवा कि हाल ही में आलमे इस्लाम की मअ़रूफ़ यूनिवर सिटी जामिउल अज़हर, क़ाहिरा से इनहिदाम क़ुबूर की हुरमत और शआइरुल्लाह के तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा के हवाले से जो एक तारीख़ी फ़तवा शाएअ़ हुवा था उसे मनज़रे आम पर ला दिया जाए। जवाँ साल आलिमे रब्बानी अ़ज़ीज़ुल क़दर मौलाना मुहम्मद अफ़रोज़

क़ादिरी चिरैयाकोटी बड़े नब्बाज़ वाक़ेअ़ हुए हैं, वह हमेशा मिल्लत की दुखती रग पर हाथ रखते हैं, और रिस्ते हुए ज़ख़्मों को मुन्दमिल करने का जतन करते हैं। इस तारीख़ी फ़तवा का शगुफ़ता व सलीस तर्जमा करके वह एक बड़ी मस्लकी ज़िम्मेदारी से ओहदा बर आ हुए हैं। उनका यह अ़मल जमाअ़ती सत़ह पर क़ाबिले सताइश और लाइक़े तक़्लीद है।

ख़त़ीबे इस्लाम अ़ल्लामा सय्यद रिज़वान अह़मद रिफ़ाई भी हमारी मुबारक बादियों के बजा त़ौर पर सज़ावार हैं जिनहोंने बर वक़्त इस फ़तवा की इशाअ़त को मुमकिन बनाया, और उर्दू दान त़बक़े के लिये इस से इस्तिफ़ादा आसान हो गया। लेकिन ज़रूरत थी कि इस फ़तवा को हिन्दी ज़बान में भी मुनतक़िल किया जाए ताकि मुसलमानों का वह बड़ा त़बक़ा जो उर्दू बोलता तो है मगर उर्दू ख़्वानी नहीं कर पाता उसके लिये भी उसका पैग़ाम आ़म हो और वह भी इस इस्लामी फ़िक्र व मिज़ाज से मुतआ़रफ़ हो। चुनान्चे अल्लाह की तौफ़ीक़ व इनायत से हम इस फ़तवा को रिफ़ाई मिशन, नासिक के प्लेटफ़ार्म के ज़रया आप तक पहुँचाते हुए क़लबी मसर्रत मह़सूस कर रहे हैं।

ख़ुदा करे कि क़ौमे मुस्लिम जागे और इस शान से जागे कि ज़माने को जगा दे, बोले और इस एतेमाद से बोले कि ज़माने में उसका बोल बाला हो जाए। अल्लाह पाक हमें दीन का सुथरा फ़हम अ़त़ा फ़रमाए। और अपनी रिज़ा व ख़ुशनूदिये मुस्त़फ़ा के कामों में जुटाए रखे। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

अल–आ़रिज़ः

सय्यद आले रसूल अब्दुल क़ादिर जीलानी क़ादिरी बग़दादी

मसूरा मह़मूदाबाद शरीफ़, कोकन ह़ाल मुक़ीम मुम्बई

सदर सुन्नी जमइयतुल उलमा, शाख़ मुम्बई

अदीबे शहीर अबू रिफ़क़ा अ़ल्लामा अफ़रोज़ क़ादिरी चिरैयाकोटी की तह़रीरों के नाम

शख़्सियत निगारी दर ह़क़ीक़त इनसानियत और नमूना–ए–इनसानियत की जुस्तुजू का नाम है। तस्नीफ़ात और तालीफ़ात की हज़ार अहमियतें सही मगर नस्लों और क़ौमों को जो बेहतर इनसान बनने का अ़ज़्म अ़ता करदे वही इनसान नमूना–ए–अ़मल बन जाता है। एज़ाज़े इनसानी और तकमीले शख़्सियत के बलन्द मनारों से दअ़वते ह़क़ व सदाक़त देने वाले का ह़र्फ़ ह़र्फ़ रूहों को झिंझोड़ देता है।

यह है अदीबे शहीर अबू रिफ़क़ा अ़ल्लामा मुह़म्मद अफ़रोज़ क़ादिरी का माज़ी व ह़ाल, उम्र छोटी, बिल्कुल जवान, मगर तख़य्युल व फ़िक्र के दाइरे गूनागूँ ख़ुसूसियात के ह़ामिल, मजलिसे अह़बाब में सबसे मुमताज़ मगर मिलन सार व ख़ाकसार फ़िलह़ाल, अफ़्रीक़ा की अ़ज़ीम "दल्लास यूनिवर सिटी" में तदरीसी ख़िदमात पर मामूर हैं। इस मसरूफ़ियत के बावजूद यह ख़ुलूस व लिल्लाहियत ही तो है कि मिल्लते इस्लामिया की रहबरी के लिये लख़्त लख़्त मौज़ूआ़त पर आपके दर्जनों मक़ालात और किताबें, हिन्द व पाक की सर ज़मीन पर ह़याते नौ का पैग़ाम देरही हैं।

पेशे नज़र किताब में दौराने मुत़ाला हर क़ारी को इस बात का एह़सास होगा कि अबू रिफ़क़ा एक कामयाब मुतर्जिम भी हैं। एक मुतर्जिम के लिये मुतबादिल अलफ़ाज़ चैलेन्ज की ह़ैसियत रखते हैं। मगर रह़मते इलाही जिसकी दस्तगीरी फ़रमाती है उसके लिये हर शय मोम व मुसख़्ख़र हो जाती है। अख़िल फ़ाज़िल अबू रिफ़क़ा के दीनी व मज़हबी सफर के ह़वाले से यह चन्द अलफ़ाज़ सिपुर्दे क़िरत़ास करते हुए, उनहीं के इस पैग़ाम पर रुख़्सत हुवा चाहता हूँ।

मैं घनी छावँ में अराम का क़ाएल ही नहीं
मेरा दुश्मन कहीं सर गर्मे अ़मल हो शायद।

सय्यद रिज़वान रिफ़ाई बरकाती

اَمانة الفتوىٰ

محمد وسام خضر، محمد شبلی، عبدالله عجمی حسن
علی عمر فاروق ، محمد عاشور ، جامع الأزهر، مصر

इस्तिफ़्ता: इस वक़्त लीबिया के अन्दर कुछ लोग एक नई फ़िक्र लेकर ख़ुदरौ पौदे की मानिन्द उग आए हैं, ख़ुद को सलफ़ सालिहीन से वाबस्ता बताते हैं, मगर यह निरा ज़ुल्म है, और इसकी हक़ीक़त बुहतान व फ़रेब के सिवा कुछ नहीं। उलमा–ए–आलाम, औलिया–ए–कामिलीन, और शुहदा व सालिहीन के मज़ारात के क़ुब्बों को मिस्मार करना, क़ब्रों की खोदाई, और उनके(पुख़्ता व बलन्द)मक़बरों के निशानात अपने हाथों, कुलहाड़ों और जदीद आलात के ज़रया उखाड़ फेंकना उनके अहदाफ़ व अग़राज़ में सरे फ़ेहरिस्त है। और यह सारा सियाह काम बिला किसी इत्तिलाअ़ वह रात की तारीकियों में कर गुज़रते हैं।

इस मन्हूस अ़मल को उस फ़िक्रे जदीद के हामिलीन की त़रफ़ मनसूब करने की वजह यह है कि पूरे शहर में बस वही लोग न सिर्फ़ ऐसे फ़िक्र व एतेक़ाद के हामिल हैं बल्कि लोगों के अन्दर भी उसकी तवरीज व इशाअ़त में वह सर गरदाँ नज़र आते हैं।

उनके अपने खुद साख़्ता अ़क़ीदे के मुत़ाबिक़ औलिया व सालिहीन की क़ब्रों पर क़ुब्बे और इमारात तामीर करना कुफ़्र व गुमरही है। यूंही उन पर मसाजिद बनाना और ऐसी मस्जिदों में नमाज़ अदा करना भी उनके नज़दीक हराम के ज़ुमरे में आता है, हालाँकि उनहें यह पता होता है कि इन क़ब्रों में बअ़ज़ सहाबा–ए–किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम

अजमईन से मनसूब हैं, कुछ किबारे उलमा व मशाइख़ की हैं जिनकी पूरी ज़िन्दगी दअ़वत इलल्लाह से इबारत रही। कुछ एअ़ला–ए–कलिमतुल्लाह की ख़ातिर बअ़ज़ इस्लाम मुख़ालिफ़ जंगों में अपनी जानों का नज़राना लुटा देने वाले मुजाहिदों की हैं,

मुस्तज़ाद यह कि जिन कब्रों को वह मिस्मार किए देते हैं, वह मुह़कमा–ए–आसारे क़दीमा के ज़ेरे ह़िमायत हैं, और उनमें से बेशतर पाँच सौ साल क़दीम हैं। उनमें ज़्यादा तर मज़ारात अहले बैते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वआलिही वसल्लम से मनसूब हैं, जिनके सुबूत आज भी तस्वीर की शकल में इन्टरनेट पर देखे और दिखाए जा सकते हैं।

इस तअ़ल्लुक़ से उलमा व मशाइख़ का तह़क़ीक़ी फ़तवा दर कार है, क्योंकि वह अ़वाम में यह कहते फिर रहे हैं कि(इन मज़ारात के इनहिदाम की शक्ल में हम दीन की ह़क़ीक़ी ख़िदमत)और और शिर्क व गुमरही के अड्डों का ख़ातेमा कर रहें हैं।

मुरसलाः मुहम्मद सालिम अ़जील

दिनाक़ः 23 / 10 / 2011ईस्वी

मुक़य्यद ब रक़मः514 |सालः2011ईस्वी

अल–जवाब: इस्लाम ने मुर्दों की हुरमत का भी पास व लिहाज़ रखा है, और उनकी तौहीन व तज़लील किसी भी त़रीक़े से ह़राम क़रार दी है, लिहाज़ा उनकी क़ब्रों की खोदाई का यह अ़मल क्यों कर जाएज़ हो सकता है?। एक मुसलमान मरने के बाद भी वही इज़्ज़त व तकरीम रखता है जो जीते जी उसे ह़ासिल थी। और अगर साहिबे क़ब्र अहलुल्लाह और सुलहा–ए–उम्मत से हों तो फिर उनके मज़ारात के साथ यह ज़्यादती न सिर्फ़ अशद ह़राम होगी बल्कि ना क़ाबिले बरदाश्त जुर्मे अ़ज़ीम भी, क्यों कि यह वह मुक़द्दस मक़ामात होते हैं जहाँ अल्लाह सुबह़ानहु व तआ़ला की रह़मतों का नुज़ूल होता है। जिसने उनहें मैली निगाह से देखा, या उनहें किसी भी त़रह़ तक्लीफ़ व अज़ीयत देने का सोचा तो वह गोया मालिकुल मुल्क के ख़िलाफ़ खुल्लम खुल्ला एअ़लाने जंग कर रहा है।

ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी मशहूर ह़दीसे क़ुद्सी है: जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी मोल ली, तो मेरी त़रफ़ से उसे खुली दअ़वते जंग है।(सह़ीह़ बुख़ारी)

ग़ौर त़लब अम्र यह है कि क़ब्र की जगह या तो ख़ुद मरने वाले की अपनी मिल्क होती है, या कोई वह जगह उसके लिये वक़्फ़ कर देता है, और वक़्फ़ ह़क्मे शरअ़ ही की मानिन्द है, लिहाज़ा इस एतेबार से भी उस क़ब्र की खोदाई या उस पर तअ़मीर शुदा क़ुब्बों और इमारात की मिस्मारी या उस जगह को जिस भी मद में इस्तेमाल किया जरहा हो(उसका इनहिदाम व इस्तीसाल किसी त़ौर पर)जाएज़ नहीं होगा।

बअ़ज़ लोग जो यह शोशा छोड़ते हैं कि उन मस्जिदों में नमाज़ बातिल है जिनमें औलिया व सालिह़ीन की क़ब्रें मौजूद हों, तो यह एक फ़ितना है और उसका ह़क़ीक़त से दूर का भी कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।

सच्ची बात यह है कि ऐसी मस्जिदों में नमाज़ शरअ़न न सिर्फ़ जाइज़ व दुरूस्त है, बल्कि दरजा–ए–इस्तिहबाब में है। इस पर किताब व सुन्नत के सरीह़ व सह़ीह़ दलाइल मौजूद हैं, सलफ़ सालिहीन का इसी पर अ़मल रहा है और उनकी इक़्तिदा में अख़्लाफ़ इसी पर कार बन्द हैं। अब उसके ह़राम व बात़िल होने की बात करना किसी नए फ़ितने को हवा देने के मुतरादिफ़ है, अहले इसलाम उसकी त़रफ़ मुत़लक़ तवज्जुह न दें और न कभी उस पर अ़मल करें।

किताबुल्लाह: कुरआन करीम में अल्लाह सुबह़ानहु व तआ़ला फ़रमाता है:

فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُنْيَاناً رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِداً (سورۂ کہف:۲۱/۱۸)

(जब अस्ह़ाबे कहफ़ वफ़ात पा गए)तो उनहोंने कहा कि उन(के ग़ार)पर एक इमारत(बत़ौरे यादगार)बना दो, उनका रब उन(के ह़ाल)से खूब वाक़िफ़ है, उन(ईमान वालों)ने कहा जिनहें उनके मुआ़मिला पर ग़लबा ह़ासिल था कि हम उन(के दरवाज़ा)पर ज़रूर एक मस्जिद बनाएंगे(ताकि मुसलमान उसमें नमाज़ पढ़ें और उनकी क़ुरबत से ख़ुसूसी बरकत ह़ासिल करें)।

इस आयते करीमा का सियाक़ व सबाक़ बता रहा है कि पहला क़ौल मुश्रिकीन का है, और दूसरा क़ौल अहले तौह़ीद का। ख़ास बात यह है कि अल्लाह सुबह़ानहु व तआ़ला ने बग़ैर किसी इनकार के दोनों क़ौल को अपनी आख़िरी किताब का ह़िस्सा बना दिया है, तो इस से शरीअ़त में दोनों के निफ़ाज़ का इशारा मिलता है। बल्कि मुवह्ह़िदीन के क़ौल का जब क़ौले मुश्रिकीन से मुवाज़ना किया जाए तो अहले तौह़ीद

की बात मद्ह़ का फ़ाइदा दे रही है, क्योंकि मुश्रिकीन की बात तशकीक आमेज़ थी, जबकि अहले तौह़ीद की क़त़ई और ह़तमी। और उनकी मुराद कोई आ़म यादगार इमारत नहीं बल्कि मस्जिद थी।

इमाम राज़ी अपनी तफ्सीर में لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِداً के तह़त फ़रमाते हैं: ताकि हम उसमें अल्लाह सुबह़ानहु व तआ़ला की इबादत व बन्दगी इख़्तियार करें, और उस मस्जिद का बड़ा फ़ाइदा यह होगा कि उसकी बरकत से अस्ह़ाबे कहफ़ के आसार(रहती दुनिया तक)बाक़ी रहेंगे।

अ़ल्लामा शहाब खे़फ़ाजी अपने ह़ाशिया–ए–तफ़्सीरे बैज़ावी में फ़रमाते हैं: इस आयते करीमा ने सालिह़ीन की क़ब्रों पर मस्जिदें तअ़मीर करने की वाज़ेह़ दलील फ़राहम करदी।

सुन्नते रसूलुल्लाह: सरकारे दुआ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वआलिही वसल्लम की सुन्नत से इसका सुबूत ह़ज़रत अबू बसीर रज़ि अल्लाहु अन्हु की वह ह़दीस है जिसे इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने मअ़मर से, इब्ने इस्ह़ाक़ ने अपनी सीरत में, और मूसा बिन अ़क़बा ने अपनी मग़ाज़ी में नक़ल किया है। याद रहे कि इमामाने मालिक, शाफ़ई और अह़मद रज़ि अल्लाहु अन्हुम की शहादत के मुत़ाबिक़ यह मग़ाज़ी की सबसे मुस्तनद किताब है। इन तीनों ने यह रिवायत इमाम ज़ुहरी से ली है, इनहोंने उरवा बिन ज़ुबैर से, वह मसूर बिन मख़रमा और मरवान बिन ह़िकम रज़ि अल्लाहु अन्हुम से कि ह़ज़रत अबू बसीर रज़ि अल्लाहु अन्हु की तदफ़ीन अबू जन्दल बिन सुहैल बिन अ़म्र के हाथों अ़मल में आई, और उनहोंने(300)तीन सौ सह़ाबा–ए–किराम की मौजूदगी में साह़िले समन्दर से लगे उनकी क़ब्र पर एक मस्जिद की तअ़मीर भी करदी। यह सह़ीहुल इस्नाद रिवायत है, इसके सारे इमाम सेक़ह हैं।

अब ज़ाहिर है ऐसा अ़ज़ीमुश्शान काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अ़लैहि वआलिही वसल्लम से मख़्फ़ी तो न रखा गया होगा, मगर ऐसा कोई सुबूत नहीं मिलता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वआलिही वसल्लम ने उस क़ब्र को मस्जिद से निकालने या उसकी खोदाई का हुक्म जारी फ़रमाया हो।

मुस्तफ़ा जाने रह़मत सल्लल्लाहु अ़लैहि वआलिही वसल्लम की एक ह़दीस से यह भी साबित है कि मसिजदे ख़ैफ़ के अन्दर(70)सत्तर नबियों की क़ब्रें हैं। इसकी तख़रीज इमाम बज़्ज़ार, और त़बरानी ने अपनी मुअ़जमे कबीर में की। हाफ़िज़ बिन ह़जर 'मुख़्तसर ज़वाइदुलबज़्ज़ार' में फ़रमाते हैं कि यह ह़दीस सह़ीहुल इस्नाद है।

आसार व अख़बार से यह भी मअ़लूम होता है कि ह़ज़रत सय्यदुना इस्माईल अ़लैहिस्सलाम और आपकी वालिदा ह़ज़रत हाजरा रज़ि अल्लाहु अन्हा ख़ाना–ए–कअ़बा के ह़त़ीम में मदफ़ून हैं। मुस्तनद मुअर्रिख़ीन ने इसका तज़करा अपनी किताबों में किया है, और उलमाए सीरत मस्लन इब्ने इस्ह़ाक़ ने अपनी सीरत, इब्ने त़बरी ने अपनी तारीख़, सुहैली ने रौज़ुल उन्फ़, इब्ने जौज़ी ने मुनतज़िम, इब्ने असीर ने कामिल, ज़हबी ने तारीख़ुल इस्लाम, और इब्ने कसीर ने अलबिदाया वन्निहाया में इसी पर एअ़तिमाद किया है। इसके इलावा बहुत से मुअर्रिख़ीन ने अपनी अपनी कुतुब में यह रिवायत दर्ज की है, लेकिन ग़ौर त़लब अम्र यह है कि मुअ़ल्लिमे इनसानियत सल्लल्लाहु अ़लैहि वआलिही वसल्लम ने उन क़ब्रों को अपनी जगह बर क़रार रखा। उनहें उनकी जगहों से हटाने, या खोदाई करके मस्जिदे ख़ैफ़ या मस्जिदे ह़राम से बाहर निकलवाने कोई अ़मल(अपनी ह़याते त़य्यबा में)नहीं फ़रमाया!।

अ़मले सह़ाबा: सह़ाबा–ए–किराम के अ़मल से इसका सबूत वह सह़ीह़ रिवायत है जिसे इमाम मालिक ने अपनी 'मुअत़्त़ा' में नक़ल किया है कि जिस वक़्त सरकारे दुआ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि

वआलिही वसल्लम ने वफ़ात पाई तो जाए तदफ़ीन के तअ़ल्लुक़ से सहबा–ए–किराम के दरमियान इख़्तिलाफ़ हुवा। बअ़ज़ ने कहा: मिम्बरे नबवी के पास, बअ़ज़ ने कहा: बक़ीअ़ में, इतने में ह़ज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अ़न्हु तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वआलिही वसल्लम को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना है:

مَا دُفِنَ نَبِیٌّ قَطُّ اِلَّا فِی مَکَانِہِ الَّذِیْ تُوُفِّیَ فِیْہِ .(۱)

यअ़नी हर नबी की तदफ़ीन ठीक उसी जगह अ़मल में आई जहाँ उसने वफ़ात पाई।

चुनान्चे(हुजरा–ए–आ़इशा में जहाँ आपने चश्मे मुबारक बन्द की थी) क़ब्र खोदी गई। और यह बात त़य है कि मिम्बर मस्जिद का ह़िस्सा होता है, लेकिन उस वक़्त किसी सह़ाबी ने उस पर कोई जर्ह़ नहीं की। हाँ! अबू बकर रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने इस राय से सिर्फ़ इस बुनियाद पर इत्तेफ़ाक़ नहीं किया कि उनके पास एक दूसरा हुक्मे नबी मौजूद था कि आपकी तदफ़ीन वहीं अ़मल में आए जहाँ रूह़े मुबारक परवाज़ करे। इस त़रह़ हुजरा–ए–आइशा में आपको दफ़न कर दिया गया, जो मस्जिद से बिल्कुल मिला हुवा है और जहाँ मुसलमान नमाज़ें अदा किया करते हैं। और बिल्कुल यही सूरत हमारे ज़माने में भी है कि जहाँ औलिया व सालिह़ीन के हुजरे थे उनसे मुत्तसिल मस्जिद बनादी गई।

इस मौक़अ़ पर बअ़ज़ लोग यह कह देते हैं कि 'मस्जिद के अन्दर होना सिर्फ़ क़ब्रे नबी की ख़ुसूसियत है' मगर यह दुरुस्त नहीं, और इसकी हैसियत दअ़वा बिला दलील से ज़्यादा नहीं,

(1) मुअत़्त़ा इमाम मालिक:2ह़दीस:791.....जामिउल उसूल मिन अह़ादीसिर्रसूल :11 ह़दीस:842।

क्योंकि उस हुजरा–ए–आइशा में न सिर्फ़ ताजदारे काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वआलिही वसल्लम मौजूद हैं बल्कि साथ ही अबू बकर सिद्दीक़ और उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हुमा भी मदफ़ून हैं जिसमें वह रहती थीं, और अपनी पंज वक़्ता व नफ़्ली नमाज़ें पढ़ती थीं, तो गोया मस्जिद के अन्दर क़ब्र जाइज़ होने पर सहाबा–ए–किराम का इजमाअ़ होगया।

इजमाई और अ़मली तौ़र पर उम्मते मुहम्मदिया इसी पर कार बन्द है, और उलमा–ए–उम्मत इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सलफ़न व ख़लफ़न अहले इस्लाम का मस्जिदे नबवी, और उन मसाजिद में जिनमें क़ब्रें मौजूद हैं नमाज़ पढ़ना बिला इनकार जाएज़ है। और यह कोई आज के उलमा का अ़मल नहीं बल्कि मदीना मुनव्वरा के उन सात फ़ुक़हा के ज़माने से चला आरहा है जिनहोंने 88 हिजरी में मुत्तफ़क़ा तौ़र पर हुजरा–ए–रसूल को मस्जिदे नबवी में शामिल कर लिया था। यह काम ह़ज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़लैहिर्रहमा के मदीना की गवरनरी के अ़ह्द में वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के हुक्म पर अ़मल में आया। उस दौर के उलमा व फ़ुक़हा में से किसी ने इस पर कोई इख़्तिलाफ़ नहीं किया, सिवाय सईद बिन मुसय्यब के। और इनका एअ़तिराज़ भी इस लिये नहीं था कि वह ऐसी मसाजिद में नमाज़ को ह़राम समझते थे जिनमें क़ब्रें हों, बल्कि इसकी वजह यह थी कि वह हुजराते नबवी को उनकी अपनी अस्ल ह़ालत पर बाक़ी देखना चाहते थे, ताकि अहले इस्लाम को उनसे इबरत पज़ीरी ह़ासिल हो, और वह इसे देख कर अपने अन्दर ज़ुह्द, और दुनिया बेज़ारी पैदा करें, और इनहें कुछ अन्दाज़ा हो सके कि शाहे दोआ़लम ताजदारे काइनात सल्लल्लाहु अ़लैहि वआलिही वसल्लम ने अपनी ह़याते त़य्यबा के मुबारक दिन किस त़रह़ और कहाँ गुज़ारे हैं!।

रही बात सहीहैन में मरवी ह़ज़रत आ़इशा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा की उस ह़दीस की कि ताजदारे दोआ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वआलिही वसल्लम का फ़रमाने अ़ज़मत निशान हैः

لَعَنَ اللّٰهُ اليَهُودَ وَالنَّصارىٰ اتَّخَذُوا قُبُورَأَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ .(١)

यअ़्नी यहूद व नसारा पर अल्लाह की लअ़्नत हो कि उनहोंने अपने नबियों की क़ब्रों को सजदा गाह बना रखा है।

तो याद रहे कि मसाजिद' मस्जिद की जमअ़् है, और उसके अन्दर मस्दरे मीमी है, जिसमें ज़मान व मकान और ह़दीस पर दलालत करने की सलाह़ियत मौजूद है। तो यहाँ क़ब्रों को मसाजिद बनाने का मअ़्ना यह है कि बर वजहे तअ़्ज़ीम उन कब्रों के सजदे किये जाएँ और उनकी इबादत शुरूअ़् होजाए, जिस त़रह़ कि मुशरिकीन का बुतों के साथ मुआ़मिला है। इसकी ताईद 'त़बक़ाते बिन सअ़्द' में मौजूद एक दूसरी सह़ीह़ रिवायत से भी होती है, ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि(रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने)फ़रमायाः

اللّٰهُمَّ لا تَجْعَلْ قَبْرِىْ وَثَناً، لَعَنَ اللّٰهُ قَوماً اتَّخَذُوْا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ . (٢)

(1) सह़ीह़ बुख़ारीः1/468ह़दीसः1324.....सह़ीह़ मुस्लिमः1/376ह़दीसः529.....सुनन अबू दाऊदः9/451ह़दीसः3229.....सुनन निसाईः3/129ह़दीसः711.....सह़ीह़ बिन हुब्बानः6/96ह़दीसः2327।

(2) मुसन्निफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ः1/406ह़दीसः1587.....मुस्नद अह़मद बिन ह़म्बलः2/246 ह़दीसः7352.....मुस्नद ह़मीदीः2/445ह़दीसः1025.....मुसन्निफ़ बिन अबी शैबाः 2/150ह़दीसः7544.....मअ़्रफ़तुस सुनन वलआसार बैहक़ीः6/338ह़दीसः2371..... कन्ज़ुल उम्मालः2/210ह़दीसः3892।

यअ्नी ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र को बुत परस्ती की नहूसत से पाक रखना। खुदा की उन लोगों पर लअ्नत पड़े जिनहोंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को सजदा गाह बना लिया।

तो इस ह़दीस में यह टुकड़ा '**لعن اللّٰه قوما**' दरअसल '**جعل القبر وثنا**' का बयान वाक़ेअ़ है। और ह़दीस का मफ़ाद यह है कि ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र को बुत न होने देना कि जिसके सजदे किये जाएँ और जिसकी इबादत की जाए, जिस त़रह़ कि कुछ लोगों ने अपने नबियों की क़ब्रों को सजदे किये हैं।

इमाम बैज़ावी फ़रमाते हैं: जब यहूद व नसारा अपने अम्बिया की तअ़ज़ीम व तकरीम में इस ह़द तक बढ़ गए कि उनक क़ब्रों को सजदे करने लगे, और उनहें अपना क़िब्ला बना कर नमाज़ में उनकी त़रफ़ तवज्जोह करने लगे, और उनहें बिल्कुल बुत ही बना लिया, तो उन पर अल्लाह की फटकार नाज़िल हुई, और अहले इस्लाम को ऐसे अ़मल से सख़्ती से मनअ़ कर दिया गया, लेकिन किसी नेक हस्ती के पड़ोस में मस्जिद बनाना, या उनके मक़बरे में नमाज़ अदा करना इस मक़सद से कि उनके रूहानी फ़ुयूज़ व बरकात ह़ासिल हों न कि बर वजहे तअ़ज़ीम व तवज्जोह, तो इसमें कोई ह़र्ज नहीं।

आपको मअ़लूम होगा कि ह़ज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का मदफ़न मस्जिदे ह़राम में ठीक ह़त़ीम के अन्दर है, फिर वह मस्जिद दुनिया की अफ़ज़ल तरीन जगह है, ह़त्ता कि हर मुसल्ली ह़ालते नमाज़ में उसकी त़रफ़ अपने रुख़ को मुतवज्जेह रखता है। हाँ! ऐसे कब्रिस्तान में नमाज़ पढ़ना ज़रूर मनअ़ है जहाँ क़ब्रें खुली हुई हों कि उसमें निजासत होती है।

(लिहाज़ा ऐसे सरीह़ और रौशन दलाइल व शवाहिद से सर्फ़े नज़र

करके)किसी मज़ार को उसकी अपनी जगह से हटाना, या मस्जिद के अन्दर से खोदाई करके उसे बाहर कर देना, खुसूसन ऐसी क़ब्रों को जो औलिया व सालिहीन और शुहदा व उलमा की तरफ़ मनसूब हैं, या उसके निशानात को मह्व करना और ऊपर के हिस्से को मुनहदिम करके उसे ज़मीन के बराबर कर देना यह सारे आमाल ख़्वाह किसी भी सूरत के तहत हों शरअ़न हराम हैं, और गुनाहे कबीरा में शामिल हैं, क्योंकि इसमें आ़म मुर्दों की बे हुरमती, और अहलुल्लाह व सालिहीन के हक़ में बे अदबी है। और उनहीं की शाने आला निशान में कहा गया था कि जिसने उनको तकलीफ़ व अज़ीयत दी वह खुद को अल्लाह के साथ जंग करने के लिये तैयार रखे। और उनके तअ़ल्लुक़ से हमें तो बस इतना ही हुक्म है कि ख़्वाह वह ज़िन्दा हों या मुर्दा हर हाल में उनकी तअ़ज़ीम व तौक़ीर और इज़्ज़त व तकरीम की जाए।

लिहाज़ा हम दुनिया जहान के मुसलमानों से उमूमन और ममालिके इस्लामिया के उलमा व फ़ुज़ला, अइम्मा व मशाइख़, और ज़िम्मेदाराने औक़ाफ़ वगैरह से खुसूसन यह दीनी दरख़्वास्त और ज़रूरी अपील करते हैं कि वह ऐसी शैतानी कोशिशों और बे सर व पा सर गरमियों को नाकाम बनाने और जड़ से उखाड़ फेंकने में पूरे शद् व मद के साथ अपना मज़हबी किरदार और फ़र्ज़े मनसबी अदा करें।

यह लोग शर्क़ व ग़र्ब के कोने कोने में जाकर उन औलिया व सालिहीन की क़ब्रों को मिस्मार कर देना चाहते हैं जिसे खुश अ़क़ीदा मुसलमानों ने अपने अदवार में तअ़मीर किया, और जिसका आग़ाज़ खुद उनके मुक़द्दस नबी अ़लैहिस्सलाम के रौज़ा–ए–अक़दस से होता है। और जिसे सहाबा–ए–किराम ने भी अपने दौर में बरता है: जैसे जद्दा के साहिल पर मक़बरा–ए–अबू बसीर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु.....सर

ज़मीने मिस्र पर अहले बैते इज़ाम मस्लन इमाम हुसैन, सय्यदा ज़ैनब, और सय्यदा नफ़ीसा के मक़बरे, नीज़ बरगुज़ीदा अइम्मा–ए–मज़ाहिब मस्लन इमाम शाफ़ई, और लैस बिन सअ्द की क़ब्रें.....बग़दाद में इमाम आज़म अबू ह़नीफ़ा, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, नीज़ औलिया व सालिह़ीन मस्लन शैख़ अ़ब्दुल कादिर जीलानी ह़म्बली के मज़ारात.....यूंही मिस्र में अबुल ह़सन शाज़ली, लीबिया में अ़ब्दुस्सलाम असमर के मक़ाबिर.

असात़ीने उम्मत और मुह़द्दिसीने किराम में बुख़ारा के अन्दर इमाम बुख़ारी, मिस्र में इब्ने हिशाम अनसारी, इमाम ऐनी, क़स्त़लानी, और सय्यिदी अह़मद दर देर वग़ैरह, ऐसे अस्लाफ़ व अकाबिर के अस्माए गिरामी की एक लम्बी फ़ेहरिस्त है।(उन लोगों के बक़ौल)यह सब शिर्क के अड्डे और मुशरिकीन के आमाल हैं। और जिस वक़्त मुसलमान यह अ़मल बजा लाते हैं तो वह अल्लाह के साथ शिर्क करने की नहूसत में गिरफ़तार हो जाते हैं। उनके नज़दीक अम्बिया व सालिह़ीन से तवस्सुल, उनके मज़रात व मकानात की तअ्ज़ीम व तौक़ीर' बुत परस्ती और शिर्क व बिदअ़त के ज़ुमरे में आती है, ह़ालाँकि उम्मते मुस्लेमा नस्लन बादा नस्लिन सदियों से उन पर अ़मल पैरा चली आरही है।

यह लोग मुसलमानों को काफ़िर व फ़ासिक़ और बिदअ़ती बनाने में अहले ख़्वारिज से किसी त़ौर कम नहीं बल्कि दो क़दम आगे बढ़ कर उम्मते इस्लामिया की तहज़ीब व सक़ाफ़त और उसके मज्द व शरफ़ का जनाज़ा उठाने पर तुले हुए हैं। उनकी देरीना तमन्ना है कि वह मुसलमानों के इल्मी, सक़ाफ़ती, और तारीख़ी आसार व बाक़ियात को नोच नोच कर नाबूद कर डालें, ताकि मुसलमानों के दिलों से एह़सास की चिंगारी भी बुझ जाए, और उनके लौहे ज़ेहन पर यह नक़्श हो जाए

कि उनके अस्लाफ़ गुमराह व गुमराह गर, फ़ासिक़ व फ़ाजिर, बुत परस्त, ग़ैरुल्लाह की की परस्तिश करने वाले, और ग़ैर शुऊरी तौर पर शिर्क से आलूदा थे।(गोयाः इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से)

इन लोगों को यह सब कुछ कर गुज़रने की जसारत व जुरअत सिर्फ़ अपनी बीमार सोच, और इल्मी ना पुख़्तगी के बाइस हुई, क्योंकि दर हक़ीक़त वह आयात व अहदीस जो ग़ैरुल्लाह की परस्तिश करने वाले मुशरिकीन की बाबत नाज़िल हुई थीं इन लोगों ने उसे उन अहले तौहीद मुसलमानों पर चिस्पाँ करना शुरू कर दिया जिनके दिल अल्लाह व रसूल की महब्बत से आबाद और औलिया व सालिहीन की अक़ीदत से पुर नूर हैं, और जो(बहुक्मे शरअ़)ज़िन्दा व मुर्दा बहर सूरत उन अहलुल्लाह की तअ़ज़ीम व तकरीम बजा लाते हैं।

यक़ीनन यह सब ख़्वारिज की बोलियाँ हैं। नाम बदला हुवा है मगर काम हू बहू वही है कि वह लोग भी मुशरिकीन के बारे में नाज़िल शुदा आयात को क़स्दन अहले इस्लाम पर फ़िट कर के(अपनी इबलीसी सोच की तस्कीन का सामान करते थे, और उम्मत में इफ़तिराक़ व इनतिशार को हवा देते थे)। इमाम बुख़ारी अ़लैहिर्रहमा ने अपनी सहीह में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के हवाले से ख़्वारिज का वस्फ़ बयान करते हुए इसे तफ़सील से बयान किया है, यूंही इमाम तबरी ने भी 'तहज़ीबुल आसार' में इसे सनदे सहीह के साथ नक़ल किया है।

इस लिये दुनिया जहान के मुसलमानों का यह फ़र्ज़ बनता है कि वह इस दीन सोज़ दअ़वत व तबलीग़ के आगे ना क़ाबिले शिकन दीवार बन कर खड़े होजाएँ, इन सरकशों की सरकशी पर बन्द बाँधें, और इनकी बग़ावत की आग को ठंडी करें, वर्ना हमारे औलिया व सालिहीन

के मज़ारात, सादाते किराम के मक़ाबिर, असात़ीने उम्मत, और उलमा व शुहदा–ए–मिल्लत के मक़ामाते मुक़द्दसा बाज़ीचा–ए–अत़फ़ाल बन कर रह जाएँगे, और यह फ़ासिक़ व मुनाफ़िक़ लोग बे सर व पा बहाने तराश कर शैत़ान के इशारा–ए–अबरू पर वह कुछ कर डालेंगे जिनका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता!।

मिस्र के बअ़ज़ औलिया व सालिह़ीन के मक़ामाते मुक़द्दसा पर इस नौ पैद जमाअ़त की सोरिशें बपा होने के बाद 'मजमउल बहूसुल इस्लामिया' अपनी ग़ैरते दीनी का मुज़ाहरा करते हुए पूरे शद् व मद के साथ न सिर्फ़ यह फ़तवा जारी करती है बल्कि उम्मत के ज़िम्मेदारों से पुर ज़ोर अपील भी करती है कि वह इस खुले चैलेन्ज का मुक़ाबला करें, इनहें सख़्ती से रोकें, और यह यक़ीन रखें कि इन लोगों के यह सारे तसर्रुफ़ात शरअ़न् ह़राम भी हैं और उरफ़न् व क़ानूनन् जुर्म भी।

जैसा कि ह़ाल ही में मिस्र के वज़ारते औक़ाफ़ से यह बयान शाए हो चुका है कि 'बद क़िस्मती से हमारे दौर में घिनावनी ज़ेहनियत रखने वाला एक ऐसा गिरोह निकल आया है (जो दीन की तअ़बीर व तशरीह़ मन चाही करता है) उनका मक़्सद लोगों को राहे हिदायत से हटाने के सिवा कुछ नहीं, उनहें इल्म की हवा तक नहीं लगी, वह अहलुल्लाह पर बड़ी जुरअत व बे बाकी दिखाते हैं, और उनके मज़ारात को नज़रे आतिश करने और मिस्मार कर देने ही को ऐने तौह़ीद समझते हैं, मगर दर ह़क़ीक़त उनहोंने यह रविश अपना कर अल्लाह व रसूल के गज़ब को मोल लिया है, और मुसलमानाने आ़लम को उमूमन और अहले मिस्र को ख़ुसूसन दिली रंज व अज़ियत पहुँचाया है, ह़ालाँकि हर दौर के उलमाए एअ़लाम का इजमाअ़ चला आरहा है कि सालिह़ीन की क़ब्रों की बेहुरमती, उनकी मिस्मारी या किसी भी त़ौर से उनकी बे अदबी शरीअ़ते

इस्लामिया की रूह़ के मुनाफ़ी है। जो भी ऐसा करता है समझें वह ज़मीन में फ़ितने फ़साद जगाता है, और क़ौम व मुल्क के अमन व सकून को ग़ारत करता है'।

लिहाज़ा मुल्के लीबिया वग़ैरह, और दीगर इस्लामी मुल्कों के अरबाबे ह़ल व अ़क़्द और बा असर व रुसूख़ शख़्सियात का यह फ़र्ज़ बनता हे कि वह इस फ़ितने का सद्दे बाब करें, और ऐसे मन्हूस हाथों को औलिया व सालिह़न के मज़ारात तक पहुँचने से पहले ही मरोड़ के रख दें, क्योंकि औलिया–ए–उम्मत के लिये उनके दिल में एह़तिराम व अ़क़ीदत का कोई शोशा बाक़ी नहीं रहा।

–अल्लाह बस ब़ाक़ी हवस–

–वल्लाहु सुबह़ानहु व तआ़ाला अअ़्लम–

24/10/2011 ईस्वी

आइन्दा सफ़ह़ात में अस्ल फ़तवा अ़र्बी ज़बान में मुलाह़ज़ा फ़रमाएँ:







جمهورية مصر العربية
وزارة العدل
دار الإفتاء المصرية
أمانة الفتوى

﴿فَسْـَٔلُوٓا۟ أَهْلَ ٱلذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ﴾ [النحل: ٤٣]

(الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده سيدنا محمد رسول الله وعلى آله وصحبه ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين)

اطلعنا على الطلب المقدم من/ محمد سالم العجيل بتاريخ: ٢٠١١/١٠/٢٣م

المقيد برقم ٥١٤ لسنة ٢٠١١م، والمتضمن:

يقوم بعض الناس في ليبيا ممن ينتمون إلى فكر النابتة -المُلصَق بالسلف الصالح ظلمًا وزورًا وبهتانًا- بهدم قباب الأولياء والعلماء والصالحين والشهداء، ونبش قبورهم بالأيدي والفؤوس والكتربيلات الكبيرة، كل هذه الأفعال يفعلونها في جنح الليل دون علم أحد، وقد نسبنا هذا الفعل لمعتنقي فكر النابتة لأنهم الوحيدون في البلد الذين ينشرون هذا الفكر بين الناس ويقولون إن بناء الأضرحة وقباب الصالحين والأولياء كفر وضلال، وحرموا بناء المساجد عليها والصلاة في تلك المساجد، وجعلوا ذلك بدعة وضلالًا. علمًا بأن بعض هذه القبور ينسب للصحابة الكرام رضي الله عنهم، ولعلماء كبار في مجال الدعوة إلى الله، ولمرابطين على الثغور، ولشهداء استشهدوا في قتالهم للإيطاليين. بالإضافة إلى نبشهم لقبور بناؤها محميٌّ من قِبَل الآثار؛ لاسيما وأكثرها يزيد عمره عن الخمسمائة سنة، وأكثرها لآل بيت النبي صلى الله عليه وآله وسلم، وكله موثق بالصور على صفحات الإنترنت.

نرجو فتواكم بالخصوص؛ لاسيما وهم يشيعون بين العوام أنهم يهدمون الكفر والضلال.

[illegible]



Web Site : http://www.[illegible].com , .net
Email : fatawa@[illegible]
العنوان : حديقة الخالدين - الدراسة - القاهرة ص. ب : ١١٦٧٥
التليفون : ٢٠٢٠٠/ الفاكس: ٢٥٩٢٦١١٤٣ - ٢٠٢

الجـــــــــواب:

حرم الإسلام انتهاك حرمة الأموات؛ فلا يجوز التعرض لقبورهم بالنبش؛ لأن حرمة المسلم ميتًا كحرمته حيًا، فإذا كان صاحب القبر من أولياء الله الصالحين فإن الاعتداء عليه بنبش قبره أو إزالته أشد حرمة وأعظم جُرْمًا؛ فإنهم موضع نظر الله تعالى، ومن نالهم بسوء أو أذى فقد تعرض لحرب الله عز وجل، كما جاء في الحديث القدسي: «مَنْ عَادَى لِي وَلِيًّا فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالْحَرْبِ» رواه البخاري من حديث أبي هريرة رضي الله عنه.

ومن المقرر شرعا أن مكان القبر إما أن يكون مملوكا لصاحبه قبل موته، أو موقوفا عليه بعده، وشرط الواقف كنص الشارع؛ فلا يجوز أن ينبش هذا القبر أو يزال ما عليه من البناء أو يُتَّخَذَ مكانُه لأي غرض آخر.

وأما ما يثار من أن الصلاة في المساجد التي بها أضرحة الأولياء والصالحين هي صلاة باطلة فقولٌ مبتدَع لا سَنَد له، بل الصلاة في هذه المساجد صحيحة ومشروعة، بل إنها تصل إلى درجة الاستحباب، وذلك بالأدلة الصحيحة الصريحة من الكتاب والسُّنَّة وفعل المسلمين سلفًا وخلفًا، والقول بتحريمها أو بطلانها قولٌ باطل لا يُلتَفَتُ إليه ولا يُعَوَّلُ عليه.

– فمن أدلة القرآن الكريم: قوله تعالى: ﴿فقالوا ابنُوا عليهم بُنيانًا رَبُّهم أعلَمُ بهم قال الذين غَلَبُوا على أمرِهم لَنَتَّخِذَنَّ عليهم مَسجِدًا﴾ [الكهف: ٢١].

وسياق الآية يدل على أن القول الأول هو قول المشركين، وأن القول الثاني هو قول الموحِّدين، وقد حكى الله تعالى القولين دون إنكار؛ فدل ذلك على إمضاء الشريعة لهما، بل إن سياق قول الموحدين يفيد المدح؛ بدليل المقابلة بينه وبين قول المحفوف بالتشكيك، بينما جاء قول الموحدين قاطعًا وأن مرادهم ليس المطلوب إنما هو المسجد.



قال الإمام الرازي في تفسير قوله تعالى: ﴿لَنَتَّخِذَنَّ عليهم مَسجِدًا﴾: [نعبد الله فيه، ونستبقي آثار أصحاب الكهف بسبب ذلك المسجد] اهـ.



Web Site : http://www.dar-alift... .com .net
Email : fatawa@dar-alift...

العنوان : حديقة الخالدين – الدراسة – القاهرة ص ـ ب : ١١٦٧٥
التليفون : ١٠٧ / الفاكس: ٢٥٩٢٦١٤٣ – ٢٠٢

وقال العلامة الشهاب الخفاجي في "حاشيته على تفسير البيضاوي": [في هذه دليل على اتخاذ المساجد على قبور الصالحين] اهـ.

– ومن السُّنّة النبوية الشريفة: حديث أبي بصير رضي الله عنه، الذي رواه عبد الرزاق عن مَعمَر، وابن إسحاق في "السيرة"، وموسى بن عُقبة في "مغازيه" –وهي أصح المغازي كما يقول الإمام مالك والشافعي وأحمد رضي الله عنهم–: ثلاثتهم عن الزُّهري، عن عُروة بن الزُّبَير، عن المِسوَر بن مَخرَمة ومروان بن الحكم رضي الله عنهم: أن أبا جَندَل بن سُهَيل بن عمرو دفن أبا بَصِير رضي الله عنه لَمّا مات وبنى على قبره مسجدًا "بسِيف البحر"، وذلك بمحضر ثلاثمائة من الصحابة. وهذا إسناد صحيح؛ كله أئمة ثقات، ومثل هذا الفعل لا يخفى على رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم، ومع ذلك فلم يَرِد أنه صلى الله عليه وآله وسلم أمر بإخراج القبر من المسجد أو نبشه.

كما ثبت عن النبي صلى الله عليه وآله وسلم أنه قال: «في مسجد الخَيفِ قَبرُ سبعين نبيًّا». أخرجه البزار والطبراني في المعجم الكبير، وقال الحافظ ابن حجر في "مختصر زوائد البزار": هو إسناد صحيح.

وقد ثبت في الآثار أن سيدنا إسماعيل عليه السلام وأمه هاجر رضي الله عنها قد دُفِنا في الحِجر من البيت الحرام، وهذا هو الذي ذكره ثقات المؤرخين واعتمده علماء السِّيَر: كابن إسحاق في "السيرة"، وابن جرير الطبري في "تاريخه"، والسهيلي في "الروض الأنف"، وابن الجوزي في "المنتظم"، وابن الأثير في "الكامل"، والذهبي في "تاريخ الإسلام"، وابن كثير في "البداية والنهاية"، وغيرهم من مؤرخي الإسلام [illegible] صلى الله عليه وآله وسلم ذلك ولم يأمر بنبش هذه القبور وإخراجها من [illegible] أو من المسجد الحرام.



– وأما فعل الصحابة: فقد حكاه الإمام مالك في "الموطأ" بلاغًا صحيحًا [illegible] اختلاف الصحابة في مكان دفن النبي صلى الله عليه وآله وسلم فقال: [فقال ناسٌ: يُدفَنُ عندَ المِنبَرِ، وقال آخَرُونَ: يُدفَنُ بالبَقِيعِ، فجاءَ أبو بَكرٍ الصِّدِّيقُ رضي الله عنه فقال: سَمِعتُ رسولَ اللهِ صلى اللهُ عليه وآله وسلم يقولُ: «ما دُفِنَ نَبِيٌّ قَطُّ إلاّ في مَكانِه

Web Site : http://www.dar-alifta.org , .com , .net
Email : fatawa@dar-alifta.org
العنوان: حديقة الخالدين – الدراسة – القاهرة ص - ب : ١١٦٧٥
التليفون: ١٠٧/ الفاكس: ٢٥٩٢٦١٤٣ – ٢٠٢



الذي تُوُفِّيَ فيه»، فحُفِرَ له فيه] اهـ، والمنبر من المسجد قطعًا، ولم ينكر أحد من الصحابة هذا الاقتراح، وإنما عدل عنه أبو بكر تطبيقًا لأمر النبي صلى الله عليه وآله وسلم أن يُدفن حيث قُبضت روحه الشريفة صلى الله عليه وآله وسلم؛ فدُفِن في حجرة السيدة عائشة رضي الله عنها المتصلة بالمسجد الذي يصلي فيه المسلمون، وهذا هو نفس وضع المساجد المتصلة بحجرات أضرحة الأولياء والصالحين في زماننا.

وأما دعوى الخصوصية في ذلك للنبي صلى الله عليه وآله وسلم فهي غير صحيحة؛ لأنها دعوى لا دليل عليها، بل هي باطلة قطعًا بدَفنِ سيدنا أبي بكر وسيدنا عمر رضي الله عنهما في هذه الحجرة التي كانت السيدة عائشة رضي الله عنها تعيش فيها وتصلِّي فيها صلواتها المفروضة والمندوبة؛ فكان ذلك إجماعًا من الصحابة رضي الله عنهم على جوازه.

- ومن إجماع الأمة الفعلي وإقرار علمائها لذلك: صلاة المسلمين سلفًا وخلفًا في مسجد سيدنا رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم والمساجد التي بها أضرحة من غير نكير، وإقرار العلماء من لدن الفقهاء السبعة بالمدينة المنورة الذين وافقوا على إدخال الحجرة النبوية الشريفة إلى المسجد النبوي سنة ثمان وثمانين للهجرة؛ وذلك بأمر الوليد بن عبد الملك لعامله على المدينة حينئذٍ عمر بن عبد العزيز رحمه الله، ولم يعترض منهم إلا سعيد بن المُسَيِّب، لا لأنه يرى حرمة الصلاة في المساجد التي بها قبور، بل لأنه كان يريد أن تبقى حجرات النبي صلى الله عليه وآله وسلم كما هي يطلع عليها المسلمون حتى يزهدوا في الدنيا ويعلموا كيف كان يعيش نبيهم صلى الله عليه وآله وسلم.



وأما حديث عائشة رضي الله عنها في الصحيحين أن النبي صلى الله عليه وآله وسلم قال: «لَعَنَ اللهُ اليَهُودَ والنَّصارى اتَّخَذُوا قُبُورَ أنبيائِهِم مَساجِدَ» فالمساجد: جمع مَسجِد، والمسجد في اللغة: مصدر ميمي يصلح للدلالة على الزمان والمكان والحدث، ومعنى اتخاذ القبور مساجد: السجود لها على وجه تعظيمها وعبادتها كما يسجد المشركون للأصنام والأوثان -كما فسَّرته الرواية الصحيحة الأخرى للحديث عند ابن



Web Site : http://www.dar-alifta.org .com
Email : fatawa@dar-alifta.org
العنوان: حديقة الخالدين - الدراسة - القاهرة ص - ب : ١١٦٧٥
التليفون: ١٠٧/ فاكس: ٢٥٩٢٦١٤٣ - ٢٠٢

سعد في "الطبقات الكبرى" عن أبي هريرة رضي الله عنه مرفوعًا بلفظ: «اللهم لا تجعل قبري وثنًا؛ لعن الله قومًا اتخذوا قبور أنبيائهم مساجد»، فجملة «لعن الله قومًا..» بيانٌ لمعنى جَعل القبر وثنًا، والمعنى: اللهم لا تجعل قبري وثنًا يُسجَدُ له ويُعبَد كما سجد قوم لقبور أنبيائهم.

قال الإمام البيضاوي: [لما كانت اليهود والنصارى يسجدون لقبور أنبيائهم؛ تعظيمًا لشأنهم، ويجعلونها قبلة، ويتوجهون في الصلاة نحوها، واتخذوها أوثانًا، لعنهم الله ومنع المسلمين عن مثل ذلك ونهاهم عنه، أما من اتخذ مسجدًا بجوار صالحٍ أو صلّى في مقبرته وقصد به الاستظهار بروحه ووصول أثر من آثار عبادته إليه -لا التعظيم له والتوجه- فلا حرج عليه؛ ألا ترى أن مدفن إسماعيل في المسجد الحرام ثم الحطيم، ثم إن ذلك المسجد أفضل مكان يتحرى المصلي بصلاته، والنهي عن الصلاة في المقابر مختص بالمنبوشة؛ لما فيها من النجاسة] اهـ.

وعليه: فإن إزالة أي ضريح من مكانه أو من المسجد المدفون فيه وخاصة قبور الأولياء والصالحين والشهداء والعلماء ومحو معالمه بتسويته وهدم ما فوقه -تحت أي دعوى- هو أمر محرم شرعًا، بل هي كبيرة من كبائر الذنوب؛ لما في ذلك من التعدي السافر على حرمة الأموات، وسوء الأدب مع أولياء الله الصالحين، وهم الذين توعد الله مَن آذاهم بأنه قد آذنهم بالحرب، وقد أُمِرنا بتوقيرهم وإجلالهم أحياءً وأمواتًا.



وبناءً على ذلك: فإننا نهيب بعموم المسلمين في مشارق الأرض ومغاربها وبالأئمة الفضلاء والعلماء الأجلاء وبالوزارات المسئولة عن الأوقاف والشئون الدينية في الدول الإسلامية إلى التنبه والتفطن إلى هذه الممارسات الشيطانية والتصدي بكل قوة لهذه الدعوات الهدامة التي ما تفتأ ترفع عقيرتها تارةً وتعبث بمعاولها تارةً أخرى زاعمة أن قبور الصالحين التي بنى المسلمون المساجد عليها شرقًا وغربًا سلفًا وخلفًا -بدءًا بنبيها صلى الله عليه وآله وسلم في روضته الشريفة بالمدينة المنورة، ومرورًا بالصحابة وآل البيت الكرام كسيدنا أبي بصير في جدة البحر، والإمام الحسين والسيدة زينب والسيدة نفيسة بأرض مصر، والأئمة المتبوعين كالشافعي والليث بن سعد بمصر، وأبي حنيفة وأحمد



ببغداد، وأولياء الله الصالحين كالشيخ عبد القادر الجيلاني الحنبلي ببغداد وأبي الحسن الشاذلي بمصر وعبد السلام الأسمر بليبيا، وعلماء الأمة ومحدثيها كالإمام البخاري في بخارى وابن هشام الأنصاري والعيني والقسطلاني وسيدي أحمد الدردير في مصر، وغيرهم ممن يضيق المقام عن حصرهم- هي من شعائر الشرك وأعمال المشركين، وأن المسلمين إذ فعلوا ذلك فقد صاروا مشركين بربهم سبحانه، ويجعلون التوسل بالأنبياء والصالحين وتعظيم أماكنهم وزيارة أضرحتهم -وهو ما أطبقت عليه الأمة وعلماؤها جيلا إثر جيل- ضربًا من ضروب الوثنية والشرك، سالكين سبيل الخوارج في تكفير المسلمين وتفسيقهم وتبديعهم، غير عابئين بتراث الأمة ومجدها وحضارتها، فلا يعود المسلم يحس بمجد تاريخي ولا علمي ولا ثقافي ينتسب إليه، ولا يعود يرى سَلَفَه إلا شُذّاذ آفاقٍ مُضلِّلين يعبدون غير الله ويشركون به من غير أن يشعروا، فينهار المسلم أمام نفسه ويصغر في عين ذاته؛ وذلك كله جريًا منهم وراء فهم سقيم لبعض الآيات القرآنية والأحاديث النبوية التي وردت في المشركين الذين يعبدون غير الله، لا في المسلمين الموحدين الذين يحبون الله ورسوله صلَّى الله عليه وآله وسلَّم وأولياء الله الصالحين ويكرمونهم أحياءً وأمواتًا، وهذه كلها دعاوى الخوارج؛ يعمدون إلى الآيات التي نزلت في المشركين فيجعلونها في المسلمين، كما رواه الإمام البخاري في صحيحه عن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما في وصف الخوارج تعليقًا، ووصله الطبري في "تهذيب الآثار" بسند صحيح.

وعلى المسلمين في كل مكان أن يتصدَّوْا لهذه الدعوات الهدامة وأن يقفوا وقفة رجل واحد لصد عدوان هؤلاء المعتدين ودفع بغي الباغين؛ حتى لا تصير أضرحة الأولياء والصالحين وآل بيت رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم ومقامات عظماء الأمة وعلمائها وشهدائها أُلعوبةً بيد كل ناعقٍ منافقٍ أو دعيٍّ فاسق يسول له شيطانه الأثيم التعديَ عليها بمثل هذه الشُّبَه الفاسدة والأغلوطات الكاسدة.

وبعد اعتداء بعض هؤلاء النابتة في الديار المصرية على بعض أضرحة أولياء الله الصالحين: صدر بيان من مجمع البحوث الإسلامية يدينُ ذلك أشد الإدانة، ويناشد



المسئولين أن يتصدَّوْا لهم؛ مؤكدًا على أن هذه التصرفات محرمة شرعًا ومجرمة عرفًا وقانونًا.

كما صدر بيان من وزارة الأوقاف المصرية؛ جاء فيه: أنه خرجت علينا فئة من ذوي المفاهيم المغلوطة لتضل الناس بغير علم وتقوم بالتطاول على الأولياء وأضرحتهم بالحرق والهدم، فحادوا الله تعالى ورسوله صلى الله عليه وآله وسلم وآذوا مشاعر المسلمين عامة والمصريين خاصة. وأنه قد أجمع علماء الدين الإسلامي في كل عصر على حرمة الاعتداء على أضرحة الصالحين بالإساءة أو الهدم لمخالفة ذلك لروح الشريعة الإسلامية، وأن من يفعل ذلك يسعى في الأرض فسادًا ويحاول إشاعة الفوضى في المجتمع وزعزعة أمن الوطن واستقراره. اهـ.

ولذلك فإنه يجب على ولاة أمور المسلمين في البلاد الليبية وغيرها من البلاد الإسلامية وعلى كل من ولاهم الله أمر المساجد وشئونها وكل من منحهم الله تعالى سلطةً أو قدرةً في منع هذا المنكر وصد ذلك الفساد العريض أن يأخذوا على تلك الأيدي الآثمة التي لا تريد أن تعرف لقبور الصالحين حرمة، ولا أن ترقب في أولياء الأمة إلاًّ ولا ذمة؛ فحسبنا الله ونعم الوكيل.

والله سبحانه وتعالى أعلم





أمانة الفتوى

٢٤/١٠/٢٠١١م

Web Site : http://www.dar-alifta.org , .com , .net
Email : fatawa@dar-alifta.org

العنوان : حديقة الخالدين – الدراسة – القاهرة ص . ب : ١١٦٧٥
التليفون : ٧٠/١٠٠/ الفاكس: ٢٥٩٢٦١١٤٣– ٢٠٢

مترجم کی کچھ دیگر مطبوعات

حرف حرف دھڑکتا ہوا، لفظ لفظ بولتا ہوا، بات بات من میں اُترتی ہوئی

برکاتُ الترتیل	216 Pages
مرنے کے بعد کیا بیتی؟	216 Pages
بولوں سے حکمت پھوٹے	184 Pages
اُن کے بول بہاروں جیسے	048 Pages
کچھ ہاتھ نہیں آتا بے آہِ سحر گاہی	352 Pages
بچوں کے لیے چالیس حدیثیں	096 Pages
کاش! نوجوانوں کو معلوم ہوتا!!	048 Pages
'وقت' ہزار نعمت	184 Pages
اربعین مالک بن دینار	048 Pages
مصطفیٰ جانِ رحمت ﷺ پر الزام خودکشی۔ کیا غلط کیا صحیح!	096 Pages
آئینہ مضامین قرآن	352 Pages
فرشتے جن کے زائر ہیں	096 Pages
باتیں جو زندگی بدل دیں	048 Pages
کلامِ الٰہی کی اثر آفرینی	144 Pages
نصیحت پارے	040 Pages
اے میرے عزیز!	048 Pages
اپنے لختِ جگر کے لیے	048 Pages
موت کیا ہے؟	088 Pages
اور مشکل آسان ہوگئی	104 Pages
مذاق کا اِسلامی تصور	100 Pages
چار بڑے اَقطاب	096 Pages
یارسول اللہ! ہم آپ سے محبت اور آپ پر درود کیوں؟	124 Pages
آئیں دیدارِ مصطفیٰ کرلیں	216 Pages

अहदे हाज़िर में आक़ा-ए-करीम ﷺ की उम्मत दाख़िली व ख़ारिजी बहुत से फ़ितनों से बयक वक़्त दो चार है। एक तरफ़ इराक़ से अफ़ग़ानिस्तान, बरमा से फ़लस्तीन और कश्मीर तक पूरी उम्मते मुस्लिमा लहू रंग है, हर तरफ़ ग़म व सोग की कैफ़ियत है, जिधर भी कान लगाते है अपने ही मुसलमान भाइयों की आह व बुका, ख़ौफ़नाक चीख़े और सिसकियाँ सुनाई देती है, और जिस सम्त निगाह उठाते है बेगोर व कफ़न लाशें है, कटे फटे जिस्म है, उजड़ी हुई बस्तियाँ है और जलते हुए मकानात। तो दूसरी तरफ़ वहाबी व नजदी अफ़कार व नज़रियात जसदे मिल्लत को खोखला और शआइरे उम्मत को मिस्मार करते चले जा रहे है। आज जन्नतुल बक़ीअ़ या मैदाने उहुद में जाकर देखिये तो आँखें ख़ून के आँसू रोने पर मजबूर हो जाती है और दिल ग़म व अन्दोह की मुजस्सम तस्वीर बन जाता है, कहीं कहीं पत्थर के ढेले रखे हुए है, वाक़िफ़े कार हज़रात उनकी तरफ़ इशारा करके बताते है कि अहले बैते अतहार के मक़ाबिर यहाँ है, हलीमा सादिया वहाँ मदफ़ून है, हज़रत हमज़ा का मज़ार उस सम्त है, वग़ैरह वग़ैरह। ख़ुद सय्यदतुन्निसा हज़रत फ़ातिमा ज़हरा का मज़ार एक मुश्त ख़ाक से ज़्यादा नहीं!। यह कैसी तौहीद है कि अपने तारीख़ी आसार मिटाती चली जारही है, इसे तो कुछ और नाम देना चाहिये!।

KHWAJA BOOK DEPOT
419/2, Matia Mahal, Jama Masji
Delhi-6, Mobile +91-9313086318
E-mail: khwajabd@gmail.com



KAMAL BOOK DEPOT
Madrsa Shamsul Uloom, Ghosi
Distt. Mau (U.P.)
Cell: 9935465128, 9335082776